हाल ही में पढ़ी दो पुस्तकों की समीक्षाएं आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं। दोनों ही पुस्तकें यथार्थ को प्रस्तुत करती हैं। ऊंटेश्वरी माता का महंत पुस्तक चर्च की कार्यवाहियों पर प्रकाश डालता है। आशा है, पाठकों को यह समीक्षा पढ़कर पुस्तकें पढ़ने की इच्छा जागृत होगी।

संदीप सिंह

डिसकवर द अर्जुन इन यू
(अपने अंदर के अर्जुन को खोजो)

भगवद् गीता को समय की सीमा में बांधा नहीं जा सकता। अर्थात इसकी प्रासंगिकता सार्वकालिक है। आवश्यकता इस बात की है कि समय के अनुरूप उसकी बार-बार व्याख्या की जाए। बाल गंगाधर तिलक ने इसकी व्याख्या अपने समय-परिस्थिति के अनुसार की तो ओशो ने अपने समय के अनुसार। आज के फास्ट फुड के युग में जब युवा भारत ने कौशल विकास की ओर ध्यान केन्द्रित किया हुआ है, तब गीता की उसके अनुरूप व्याख्या किए जाने की आवश्यकता है। संतोष मोघ की किताब ''डिसकवर द अर्जुन इन यू'' इस आवश्यकता की पूर्ति कर रही है।

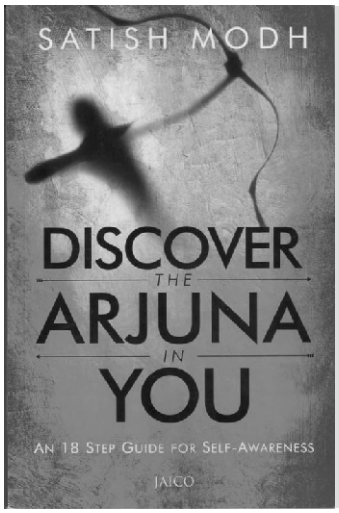

लेखक का नाम
सतीश मोढ

पृष्ठ संख्या
१८२

मूल्य
२५० रुपये

इस पुस्तक में भी भागवत गीता की तरह १८ अध्याय हैं, जिसमें भारतीय परम्परा के उदाहरण केस स्टडी के रूप में दिए गए हैं। इसके छोटे-छोटे अध्याय तथा सरल भाषा पुस्तक को पठनीय बनाती है।

इसका सबसे अच्छा पक्ष इस किताब की आधारशिला में हैं। यह किताब केवल सैद्धांतिक विचार मात्र नहीं है, तो संतोष मोघ ने भगवद् गीता की 'गुण' अवधारणा को आधार बनाकर व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को विकसित किया है। इसे उन्होंने हजारों व्यक्तियों पर प्रयोग कर जांचा है। यह किताब इसी अध्ययन का परिणाम होने से प्रभावी बन गई है। स्ट्रेटेजी में शोधकार्य कर चुके श्री संतोष मोघ को कारपोरेट दुनिया का भी खासा अनुभव है, साथ ही देश की अनेक प्रमुख संस्थाओं में अध्यापन का भी अनुभव है। उनकी इस पुस्तक में तथा अध्यायों की रचना में इन दोनों प्रकार के अनुभवों की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। प्रत्येक अध्याय एक्शन प्लान से शुरू होने के कारण सामान्य व्यक्ति को भी मार्गदर्शन देने में सफल रहेगा। इस किताब को उस प्रत्येक व्यक्ति ने पढ़ना चाहिए जो जीवन युध्द को हार चुका है और जीवन में सार्थक उद्देश्य की खोज में है। अर्जुन का जीवन भी तो संघर्षों से युक्त था, परन्तु उसने कभी अपने उद्देश्य को ओझल नहीं होने दिया।